# कल्पसूत्रम् भाग-२ (फोल्डर नं. ०२१६२)
## घासीलालजी महाराज

मुख्य टाइटल
विषयानुक्रमणिका
भगवान के जन्मकाल का वर्णन ---------- १-१४
भगवान् के दर्शनार्थ आते हुए देवों का वर्णन ---------- २६-३१
देवों के आनन्द, आठ प्रकार के कलश, शक्रेन्द्र की चिंता और मेरुकंपन का वर्णन ---------- ४५-५०
त्रिशला द्वारा की गई पुत्र की प्रशंसा का वर्णन ---------- ७३-८३
भगवान् का कलाचार्य के समीप अध्ययन करने की अनुचितता का प्रतिपादन करना ---------- १०२
इन्द्र द्वारा भगवान् को चरमतीर्थंकर रूप से प्रकाशित करना ---------- १०९
भगवान् को दीक्षा के लिये लोकान्तिक देवों की प्रार्थना---------- १२३
भगवान् का दीक्षामहोत्सव का वर्णन ---------- १२९-१३१
सुरेन्द्रादि देवोंका पूर्वादि दिशाओंका क्रमसे वहन करने का वर्णन ---------- १३५
भगवान् को मनःपर्यवज्ञान प्राप्ति का वर्णन ---------- १४३
सहायता के लिये इन्द्रकृत प्रार्थना का अस्वीकार करना---------- १६५
सहायता के लिये इन्द्र की प्रार्थना का अस्वीकार ---------- १७२
विकट मार्ग में चंडकौशिकसर्प के बांबी के पास भगवान के कायोत्सर्ग करने का वर्णन ---------- १८८
उत्तरावाचाल गाम में नागसेन के घर पर भगवान् के भिक्षा ग्रहण का वर्णन ---------- २०४-२०६
भगवान् की संगमदेवकृत उपसर्ग का और भगवान् के चातुर्मास का वर्णन---------- २२२-२२६
भगवान् के समभाव का वर्णन ---------- २३१-२३५
भगवान् के समभाव का वर्णन ---------- २३९
भगवान् के अभिग्रह का वर्णन ---------- २६२-२६७
धनावह शेठ के घर में पांच दिव्य प्रगट होने का वर्णन ---------- २७७
भगवान् के विहार का वर्णन ---------- ३०१-३०३
भगवान् की अवस्था का वर्णन ---------- ३११-३१४
भगवान् की केवलज्ञानदर्शन प्राप्ति का वर्णन ---------- ३२५-३२८
पावापुरी में सोमिल ब्राह्मण का यज्ञ का वर्णन ---------- ३३७-३३९
यज्ञ के वाडे में उपस्थित ब्राह्मणों का वर्णन ---------- ३४९-३६३
अग्निभूति ब्राह्मण का कर्म के विषय का संशय निवारण और उनकी दीक्षाग्रहण का वर्णन -- ३७८-३८९
सुधर्मा नामक ब्राह्मण का समानभव विषयक संशय का निवारण और उनकी दीक्षाग्रहण का वर्णन ---------- ४०८-४१०
अचलभ्राता नामक पंडितका पुण्य पाप के विषय में संशय का निवारण और उनके दीक्षाग्रहणका वर्णन ---------- ४१७-४२०
प्रभास पंडितका निर्वाणविषयक संशय का निवारण ---------- ४२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणधरों के शिष्यसंख्या का वर्णन ---------- ४३६
नवप्रकार के गणों का भेदप्रदर्शन ---------- ४४३
गौतमस्वामी के केवलज्ञानप्राप्ति का वर्णन ---------- ४५७
दीपावल्यादिकी प्रसिद्धि के कारण का वर्णन ---------- ४६३
सुधर्मस्वामी के परिचय का वर्णन ---------- ४७३-४७४
उपसंहार और ग्रन्थसमाप्ति ---------- ४८६-४९०
श्री महावीरस्वामीकृत तप का कोष्ठख ---------- ४९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org